कविता संग्रह



एकलव्य

कविता संग्रह
(प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह, एकलव्य द्वारा संकलित)

प्रथम संस्करण- 1995

मूल्य : रु. 10.00 (दस रुपए)

प्रकाशक :
एकलव्य
ई-1/25, अरेरा कालोनी
भोपाल, म.प्र.
462016

इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के बारे में :
ये कविताएं एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह द्वारा समय- समय पर विभिन्न स्त्रोतों से साभार संकलित की गई हैं।

इस संग्रह में प्रकाशित सभी कविताओं के लेखकों के प्रति एकलव्य आभारी है। कुछ कविताओं के साथ लेखकों के नाम मालूम नहीं होने के कारण नहीं दिए जा सके हैं। इसका हमें खेद है। अगर सुधी पाठक लेखकों के नाम जानते हों तो कृपया हमें लिख भेजें, ताकि अगले संस्करण में उन्हें कविताओं के साथ प्रकाशित किया जा सके।

आवरण : शिवेंद्र पांडिया। संग्रह के अन्य चित्र कैरन व शिवेंद्र द्वारा। सहयोग- पल्लवी।

कविता संग्रह

संकलित कविताएं बच्चों के साथ गाने - गुनगुनाने के लिए हैं। कविताओं से पात्र, वस्तु व घटनाएं तथा तरह-तरह की अवधारणाएं, रोचक व मज़ेदार क्रम में प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। इसमें बच्चों के लिए सुनने-बोलने (भाषा की पहली सीढ़ी) व अपना कुछ जोड़ पाने के लिए यथास्थान मौका दिया गया है। लेकिन कविता के उद्देश्य तब तक पूरे नहीं हो सकते जब तक कि इसे बच्चों के साथ हाव - भाव, और पात्रों के अभिनय के साथ लय में न गाया जाए। आशा है लय में गाने, अपना कुछ जोड़ पाने के बाद, बच्चों के लिए कक्षा से बाहर सोचने व गाने-गुनगुनाने के लिए कुछ मिल सकेगा।

प्राशिका
एकलव्य
1995

पृष्ठ क्र.

कविताओं के बारे में....

ये कविताएं आप बच्चों के साथ मिलकर गा सकते हैं।

कविता को लय में और हाव-भाव के साथ गाना बच्चों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है इसी पर उनकी रुचि निर्भर करेगी। कविता के साथ एक्शन करते समय सभी बच्चों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे बच्चों की हिचक दूर हो जाएगी।

कविता को कई बार दोहराना ज़रूरी है। जैसे-जैसे बच्चे कविता से ज़्यादा परिचित होंगे, वैसे-वैसे वे और सक्रिय रूप से भाग ले पाएंगे।

कविताओं में दी गई वस्तुओं, जानवरों और पात्रों को लेकर बच्चों के साथ चर्चा हो सकती है। इसमें ध्वनियाँ, आवाज़ें और घटनाएं जोड़ी जा सकती हैं। इससे बच्चों की सुनने-बोलने की क्षमता को प्रोत्साहन मिलेगा जो उनकी भाषा के विकास में सहायक होगा।

कई कविताएं कक्षा में ही आगे बढ़ाई जा सकती हैं। शिक्षक और बच्चे उनके आधार पर नई कविताएं भी बना सकते हैं। अगर आप के यहां कुछ नई-नई कविताएं उभरें तो हमें ज़रूर भेजें ताकि हम उन्हें दूसरे बाल मित्रों तक भी पहुंचा सकें।

कुछ कविताओं की मदद से विशेष अवधारणाएं भी उभर सकती हैं। जैसे-रंग, आकार, ऊंचा-नीचा, मोटा-पतला आदि।

इस संकलन में जो कविताएं हैं वे इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। ये केवल अलग-अलग प्रकार की संभव कविताओं के उदाहरण हैं। ऐसी अन्य कई कविताएं शायद आपको ही आती हों। बच्चों की भाषा में भी

छोटी-छोटी मज़ेदार कविताएं होंगी जिनका इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके अलावा पुस्तकालय की पुस्तकों से भी कविताएं छांटी जा सकती हैं।

हर कविता से संबंधित चित्र उसके साथ दिए गए हैं। कविता सुनाते समय बच्चों को ये चित्र भी दिखाएं, उन पर चर्चा करें। इससे बच्चों को कविता समझने में आसानी होगी, उनकी भागीदारी बढ़ेगी।

अपने शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कविता में लय और हाव-भाव होना ज़रूरी है। इससे हर बार उसमें रोचकता और नयापन बना रहता है, चाहे वह कितनी ही बार दोहराई जाएं। कुछ कविताओं के बारे में हम यहाँ अलग से लिख रहे हैं-

1. नानाजी नानी से बोले

इस कविता में दो ऐसे पात्र हैं जो बच्चों को मज़ेदार लग सकते हैं। शायद बच्चे इनसे अपनी भाषा में किसी और नाम से परिचित भी होंगे। नाना-नानी के बीच ऊंचाई की होड़ को लेकर एक निश्चित क्रम में ऊंचाई की अवधारणा से परिचित कराने की कोशिश की गई है। जैसे-घोड़ा ऊंचा है, हाथी उससे ऊंचा, और ऊंठ उससे भी ऊंचा है आदि। कविता गाते समय, हाथी की तरह ऐक्शन करते समय बच्चों को ऊंचाई का एहसास करवाया जा सकता है।

बाद में बच्चों के बीच परिचित चीज़ों को लेकर इस प्रकार के ऊंचाई के क्रम की चर्चा की जा सकती है। साथ ही नई कविताओं की रचना की जा सकती है।

2. लाल-लाल

इस कविता में परिचित वस्तुओं के माध्यम से लाल रंग की पहचान करवाई जा रही है। कक्षा में ऐसी वस्तुओं के इस्तेमाल के दौरान कोशिश हो कि बच्चे अपने अनुभव से या आस-पास से लाल रंग की वस्तुएं खोजें व "लाल-लाल"

वाले क्रम में बांधकर कविता आगे बढ़ाएं।

बच्चों में रंगों का अवलोकन और स्मृति विकसित करने के उद्देश्य से इसे अधूरा छोड़ा गया है। अपेक्षा है आप इस क्रम को आगे बढ़वाएंगे।

3. क्या-क्या काला

कविता काले रंग की समान वस्तुओं और उनसे संबंधित ध्वनियों से आरंभ होती है। पर आगे जाकर ये दो रंगों (काला-सफेद) की तुलनात्मक पहचान में बदल गई है। कविता में अधिकांश वस्तुएं बच्चों के पर्यावरण और पहचान की हैं ताकि वे उन्हें आस-पास देखकर उनमें तुलना करके इस अंतर को समझ सकें। ''लाल-लाल'' की तरह यहां भी आशा है कि इसे दोहराने के बाद बच्चे अपने आस-पास की काली-सफेद वस्तुओं के रंग को पहचान कर उसे कविता-क्रम में जोड़ेंगे और कविता को आगे बढ़ाएंगे।

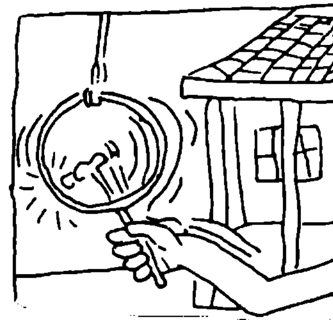
4. खट-खट

बच्चों में विभिन्न ध्वनियों की नकल उतारने की आदत होती है। इस कविता में उसी को प्रोत्साहन देने की कोशिश की है। इससे ध्वनि पहचानने की क्षमता और सटीक होती है जो आगे जाकर अक्षरों से जुड़ी ध्वनियों की पहचान में मदद करती है। कविता में उपयोग की गई ध्वनियों को बार-बार दोहराने से आरंभिक पहचान के साथ उनमें बोल पाने की क्षमता विकसित होती है। कविता में ऐक्शन इतनी गति से होता है कि बच्चे अपना संकोच छोड़कर अभिनय में लग जाते हैं।

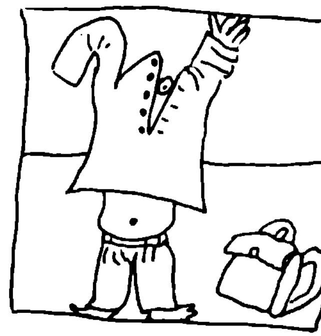
प्राशिका समूह **जुलाई, 1995**
एकलव्य

1. घंटा बोला

घंटा बोला चलो मदरसे,
निकलो, निकलो, निकलो घर से।
घंटा बोला चलो मदरसे,
जल्दी निकलो अपने घर से।



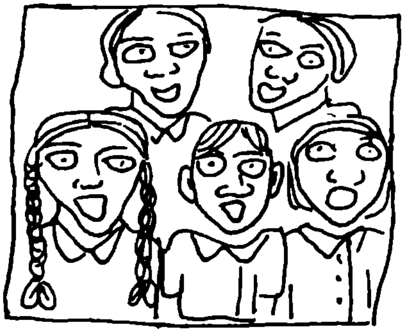
कपड़े पहनो, बस्ता ले लो,
जल्दी निकलो अपने घर से।
जो तुम देर करोगे भैया,
तो फिर होगी धम्मक-धैया।



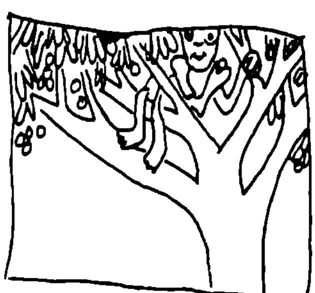
डांट पड़ेगी इधर-उधर से,
घंटा बोला चलो मदरसे।
डांट पड़ेगी इधर-उधर से,
जल्दी निकलो अपने घर से।



2. काली जामुन

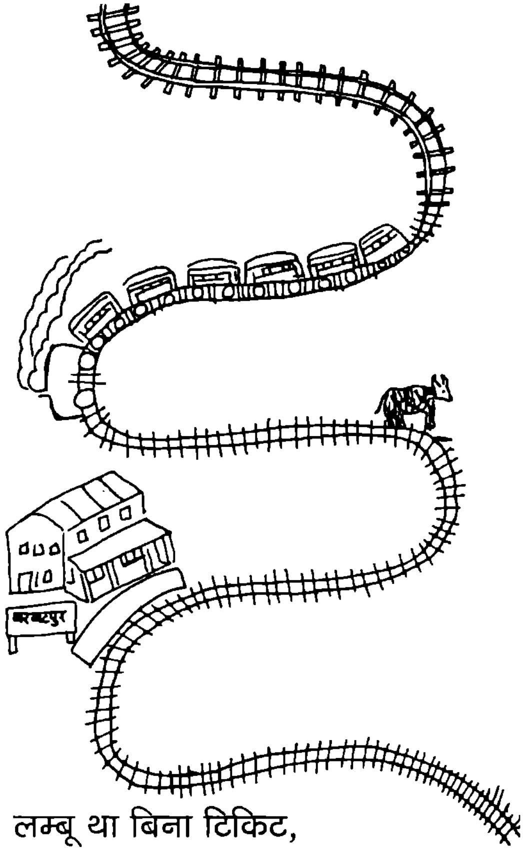






आओ आओ
खुशी से आओ,
गाओ गाओ
सब मिल गाओ।
जामुन है ये
काली काली,
लटक रही है
डाली डाली।
देखो मैं ऊपर
चढ़ जाऊं,
डाल पकड़कर
खूब हिलाऊं।
बरस पड़ेंगी
टप - टप - टप - टप
बीनो उनको
झट - पट, झट - पट
चलो चलेंगे
नदी किनारें,
धो धो सब
खाएंगे प्यारे।

3. छुक–छुक रुक–रुक



गाड़ी करती छुक - छुक - छुक
लम्बू कहता रुक - रुक - रुक।

डिब्बा कहता घुस - घुस - घुस,
लम्बू चढ़ गया चुप - चुप- चुप,
इंजन बोला कू...ऊ.कू..,
गाड़ी चल दी छुक - छुक - छुक।

आगे थी एक भैंस खड़ी,
गाड़ी से वो नहीं डरी,
गाडी रुक गई,चूं..चर्र,
भैंस गिर पड़ी धड़ाम ढर।

गाड़ी चल दी छुक - छुक - छुक,
आगे आया बरबटपुर,
गाड़ी रुक गई चूं..चर्र,
लोग चढ़े खूब भर - भर।

लम्बू था बिना टिकिट,
उतर के भागा, टिक -टिक -टिक,
आगे जाकर पकड़ा गया,
बिना टिकिट का मजा आ गया।

गाड़ी चल दी छुक - छुक - छुक,
इंजन करता कू..ऊ..ऊ..ऊ...,
छोटी होती दूर - दूर,
गाड़ी हो गई छू..॥

- प्राशिका समूह

4. हाथी



हाथी आता झूमके,
धरती मिट्टी चूमके,
कान हिलाता आता है,
गन्ने पत्ते खाता है,
देखो इसके लम्बे दांत,
मुंह के अन्दर दूसरी आंत,
आंखें इसकी छोटी-छोटी,
सूंड तो इसकी काफी मोटी॥

5. धम्मक–धम्मक



धम्मक-धम्मक आता हाथी,
धम्मक-धम्मक जाता हाथी,
अपनी सूंड उठाता हाथी
अपनी सूंड गिराता हाथी
अपनी पूंछ हिलाता हाथी
धम्मक-धम्मक आता हाथी॥



जब पानी में जाता हाथी,
भर-भर सूंड नहाता हाथी,
कितने केले खाता हाथी,
यह तो नहीं बताता हाथी,
धम्मक-धम्मक आता हाथी,
धम्मक-धम्मक जाता हाथी॥

- प्रयाग शुक्ल

6. चूं–चूं चिड़िया



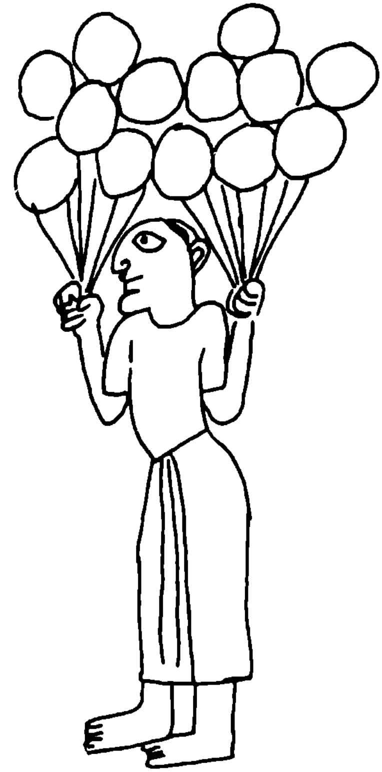
चूं-चूं करती चिड़िया आई,
चुन-चुनकर वह दाना लाई,
बच्चे भी मुंह खोल रहे हैं,
चूं-चूं-चूं-चूं बोल रहे हैं,
बड़े जतन से पाल रही है,
दिन भर उसका काम यही है,
बच्चे थोड़ा बढ़ जायेंगे,
फर से वे सब उड़ जायेंगे॥

7. तोता

तोता हरे-हरे पर वाला
पहने कंठा लाल और काला।
लाल-लाल है चौंच नुकीली
आंखें कैसी नीली पीली।
कुतर-कुतर फल खाता है
टें - टें - टें चिल्लाता है।
- निरंकार देव सेवक



8. फुग्गा



फुग्गों का लेकर ढेर,
देखो आया है शमशेर।

हरे, बैंगनी, लाल, सफेद,
रंगों के हैं कितने भेद।

कोई लंबा कोई गोल,
लाओ पैसा ले लो मोल।

मुटठी में लो इनकी डोर,
इन्हें घुमाओ चारों ओर।



हाथों से दो इन्हें उछाल,
लेकिन छूना खूब संभाल।

पड़ा किसी के ऊपर ज़ोर ,
एक ज़ोर का होगा शोर।

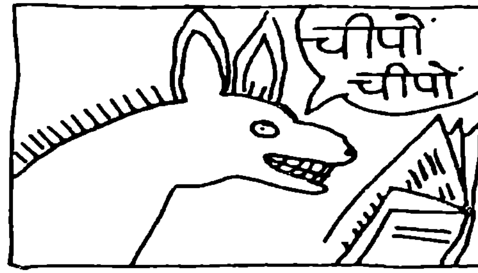
गुब्बारा फट जाएगा,
खेल खत्म हो जाएगा॥

-सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

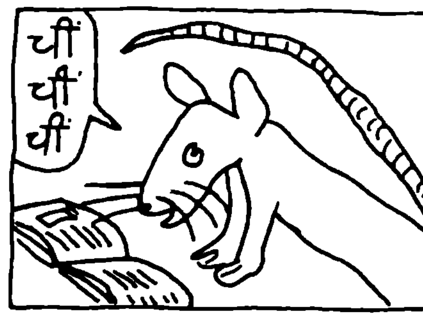
9. हिन–हिन



रामू बोला घोड़े से- -
ऐ घोड़े - गिनती तो गिन।
घोड़ा पोथी लेकर बोला- -
हिन-हिन-हिन, हिन-हिन-हिन



रामू बोला गधे से,
गधे - पढ़ क ख ग घ यों।
गधा पोथी लेकर बोला - -
चीपों - चीपों - चीपों ।



रामू बोला चूहे से - - -
चूहे - पढ़ अ आ इ ई ।
चूहा पोथी लेकर बोला- -
चीं-चीं-चीं,चीं-चीं-चीं ।



रामू बोला कुत्ते से- - -
कुत्ते - पढ़ उ ऊ ए ओ ।
कुत्ता पोथी लेकर बोला - - -
भों-भों-भों, भों-भों-भों-भों ।

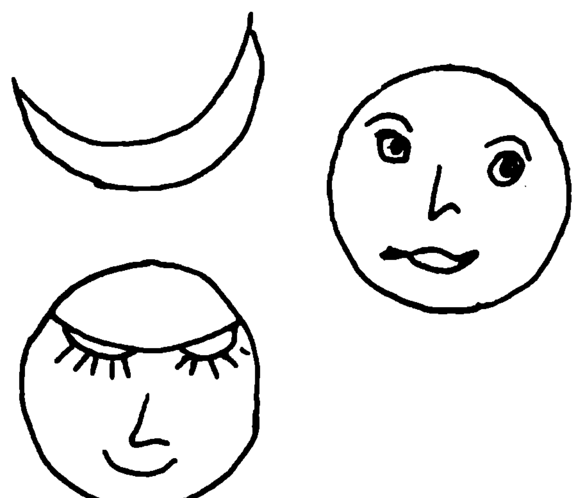
10. नानी कहे कहानी



चंदू की नानी
कहे कहानी,
एक था शरबत
एक था पानी,
नानी पिए शरबत
चंदू पिए पानी,
रूठ गया चंदू
खत्म हुई कहानी।

11. चंदा मामा

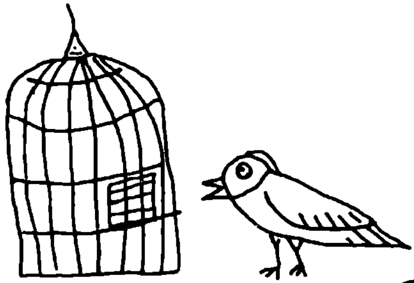
चंदा मामा दूर के,
बड़े पकाए मूंग के ।
आप खाएं थाली में,
हमें खिलाएँ प्याली में ।
प्याली गई टूट,
मामा गए रूठ।
लाएँगे नई प्यलियां,
बजा - बजा के तालियां।



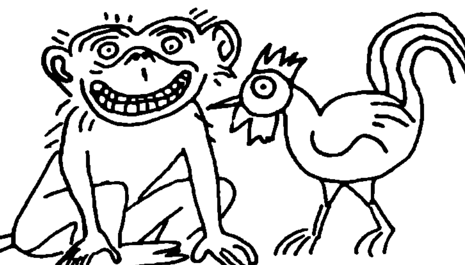
12. बिल्ली बोली म्याऊं



बिल्ली बोली म्याऊं,
कुतिया करे चाऊं,
बिल्ली बोले म्याऊं,
कुतिया करे चाऊं।



पिंजरे से मैना बोले,
अंदर कभी न आऊं।
बिल्ली बोले म्याऊं,
कुतिया करे चाऊं।



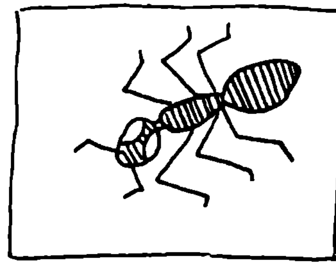
बंदर करता चिक् - चिक्,
मुर्गा करता कुकड़ूं कूं,
नहीं मानो तो बच्चों सुनना,
कोयल कुहके कुहू - कुहू ।



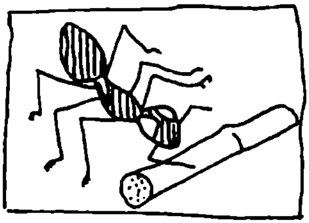
कौआ करता कांव - कांव,
पपीहा बोले पीहू - पीहू,
सुनकर बच्चो डर मत जाना,
शेर करता हाऊं।

बिल्ली बोले म्याऊं
कुतिया करे चाऊं
बंदर करता खों-खों-खों
शेर बोला हाऊं।

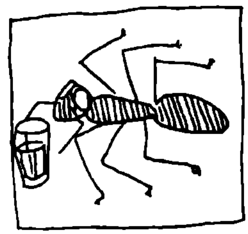
13. चींटा



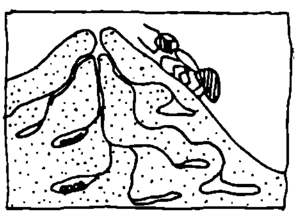
चींटा-चींटा दूध ला,
दूध लाकर दही जमा,
बढ़िया-बढ़िया दही जमा,
खट्टा-मीठा दही जमा।



चींटा - चींटा गन्ना ला,
गन्ना लाकर शक्कर बना,
चींटी भूखी आएगी,
झट - पट वो खा जाएगी।

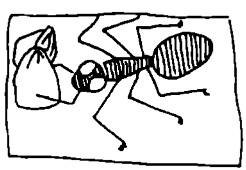


चींटा - चींटा शक्कर ला,
शक्कर लाकर शरबत बना,
चींटी प्यासी आएगी,
झट - पट वो पी जाएगी।



चींटा - चींटा घर तू बना,
चींटी धूप से आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
झट से वो रुक जाएगी।

चींटा - चींटा बाज़ार जा,
शक्कर ला, चावल ला,
रोटी ला, पानी ला,
झट-पट जा, झट-पट आ।

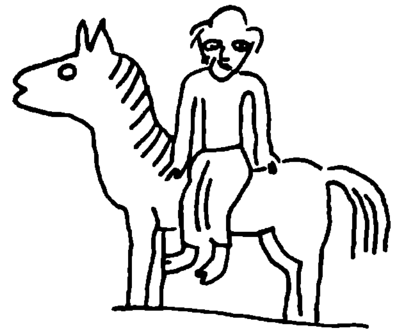


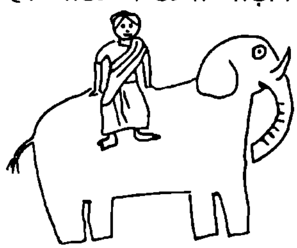
चींटी जब घर आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी।

- प्राशिका समूह

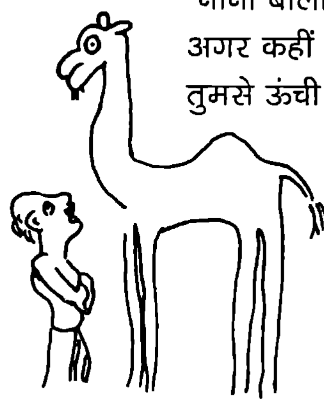
14. नाना जी – नानी जी

नानाजी नानी से बोला,
अगर कहीं पा जाऊं घोड़ा,
तुमसे हो जाऊं मैं ऊंचा थोड़ा।





नानी बोली,
अगर कहीं हाथी पा जाऊं,
तुमसे ऊंची मैं हो जाऊं।



नानाजी को गुस्सा आया,
फिर ज़ोर से वो चिल्लाया,
यदि ऊंट पर चढ़ जाऊं मैं,
सबसे ऊंचा हो जाऊं मैं।

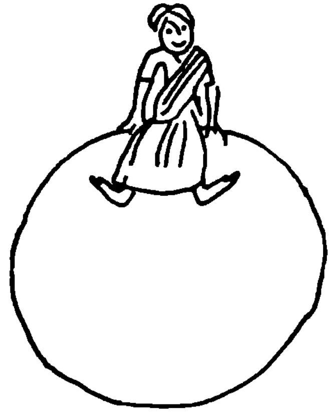


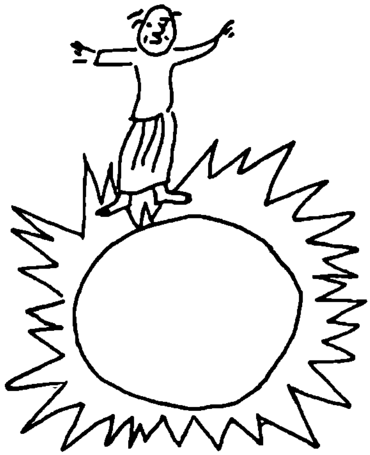
नानीजी फिर कहां रुकी,
नाना के आगे नहीं झुकी।
घर पर नानी चढ़कर बोली,
सबसे ऊंची मेरी डोली।

नाना ने दौड़ लगा दी,
भागे-भागे ज़ोर से भागे,
ज़ोर से भागे, ज़ोर से भागे,
पहाड़ पर चढ़कर वो चिल्लाए,
मैंने ऊंचा आसन पाया!
सबसे ऊंचा आसन पाया!

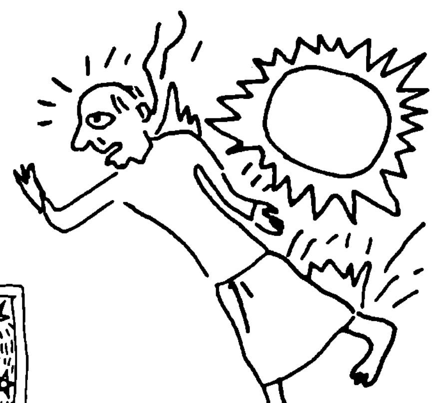


नानीजी चांद पर चढ़कर बोली,
सबसे उंची मेरी डोली
बादल जैसी मेरी डोली।





नानाजी मन ही मन बोले,
इससे ऊंचा होगा क्या?
नानाजी सूरज तक दौड़े,
गरम लगा चिल्लाकर बोल,
जल गया .... .आ! आ!

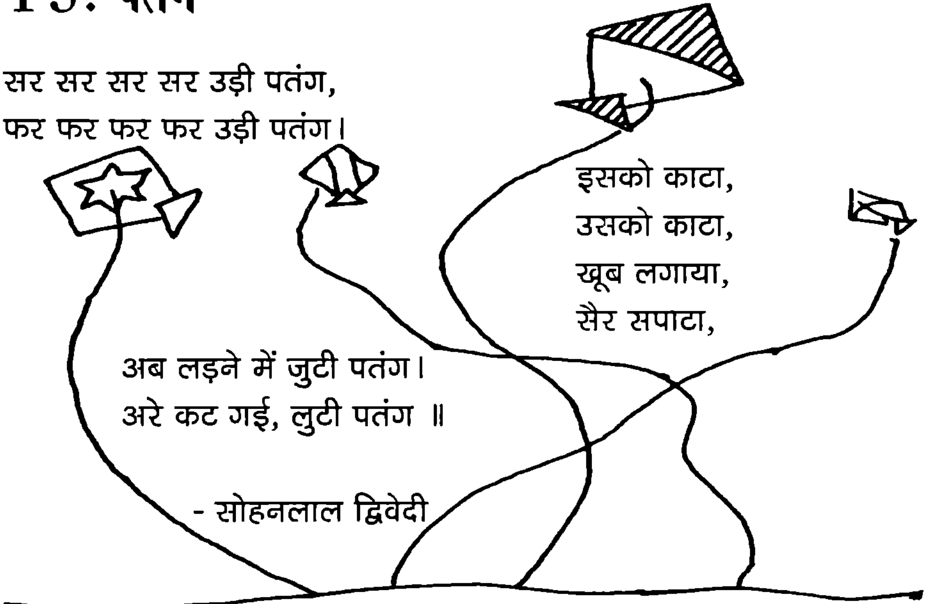


नहीं बनना तुमसे ऊंचा,
नानी अब तू नीचे आजा,
नानी अब तू नीचे आजा ॥



- प्राशिका समूह

15. पतंग



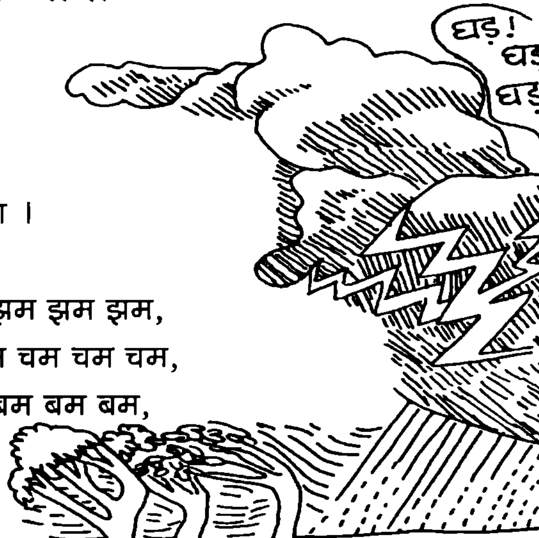
सर सर सर सर उड़ी पतंग,
फर फर फर फर उड़ी पतंग।

इसको काटा,
उसको काटा,
खूब लगाया,
सैर सपाटा,

अब लड़ने में जुटी पतंग।
अरे कट गई, लुटी पतंग ॥

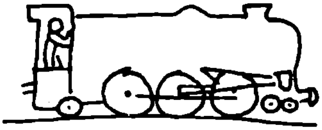
- सोहनलाल द्विवेदी

16. पानी आया

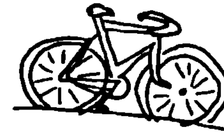


बादल गरजे घड़ घड़ घड़ घड़,
बूंदे बरसीं पड़ पड़ पड़ पड़ ।
पत्ते बोले फड़ फड़ फड़ फड़ ।
है अजब शोर जग मैं छाया ।
पानी आया,पानी आया ।
बादल बरसें झम झम झम झम,
बिजली चमकी चम चम चम चम,
बोलो हडम हडम बम बम बम,
झोंका तेज़ हवा का आया।
पानी आया, पानी आया।

17. क्या–क्या काला



इंजन काला, साइकिल काली
दोनों की आवाज़ निराली
इंजन करता,
छुक-छुक-छुक



साइकिल करती
किट-किट-किट



कौआ काला, कोयल काली,
दोनों की आवाज़ निराली
कौआ करता,
कांव-कांव



कोयल करती,
कुहू-कुहू



गाते जाओ रुकते क्यूं
कोयल करती, कुहू-कुहू।
दाढ़ी काली,
मूंछें काली
आंखें काली
चोटी काली

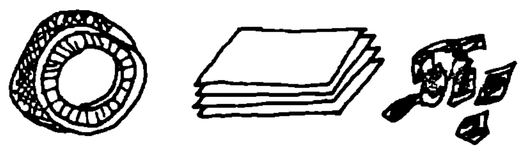


अर्रर. . . , भूल हो गई।
बूढ़ों की दाढ़ी होती सफेद
धोती सफेद, टोपी सफेद।



आंखें भी नहीं पूरी काली,
बीच में काली, बाकी सफेद,
धोती काली, टोपी सफेद।

आगे देख, पीछे देख,
इनके भी हैं रंग अनेक



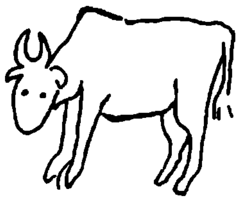
कोयला काला, चूना सफेद।
टायर काला, कागज़ सफेद।

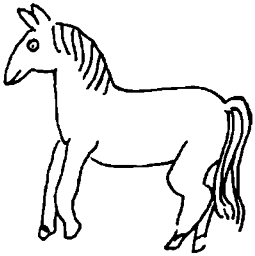


सड़कें काली, दांत सफेद।
काजल काला, चावल सफेद।

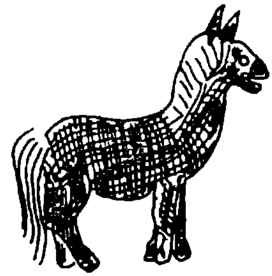
कुछ है काला , कुछ है सफेद।
बाहर देख, भीतर देख ।
क्या है काला? क्या है सफेद?





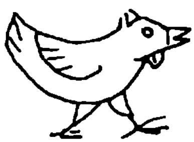



गाय काली, गाय सफेद,
घोड़ा काला, घोड़ा सफेद,



मुर्गी काली, अंडा सफेद,
मुर्गी सफेद, अंडा सफेद।

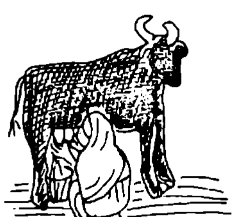
क्या है काला,क्या है सफेद?

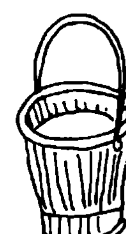




भैंस काली दूध सफेद,
नहीं माने तो दुह कर देख।

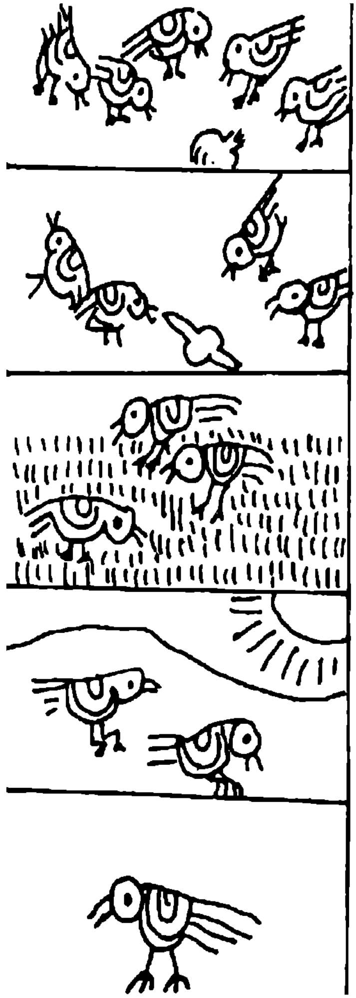
कुछ है काला, कुछ है सफेद।
बाहर देख, भीतर देख,
ऊपर देख, नीचे देख,





क्या है काला, क्या है सफेद?
क्या है काला, क्या है सफेद?

-प्राशिका समूह



19. खट – खट

एक था खट-खट,
बहुत ही नटखट।

एक दिन झटपट,
गया वो पनघट।

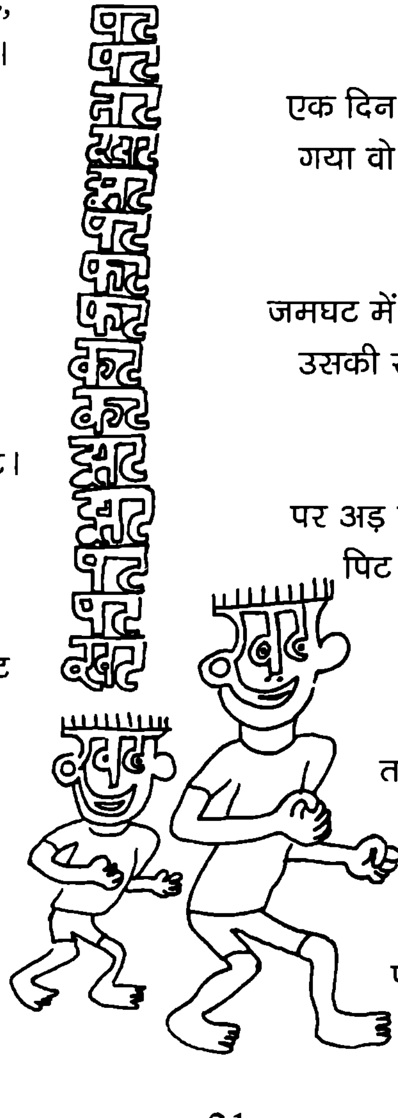
वहां पर देखा,
उसने जमघट।

जमघट में हो गई,
उसकी खटपट ।

लोगों ने बोला,
चल हट, चल हट।

पर अड़ गया खट-खट,
पिट गया पट-पट ।

पट-पट-पट-पट
कट-कट-कट-कट



ताड़ा डाड़ा डाड़ा डुम्ब,
और फिर भागा,
खटपट झटपट,
झट झट झट झट,
पट पट फट फट !

-प्राशिका समूह

20.गप्पू – गपोड़



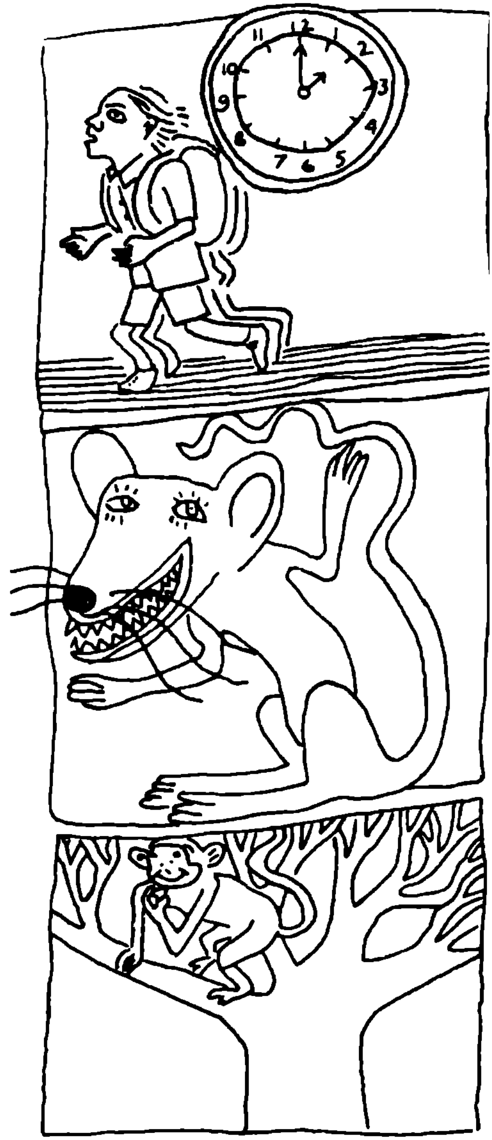
एक था गप्पू गपोड़,
उसके जैसा कोई न जोड़।
एक दिन खाकर बोर,
गप्पू बोला वो रहा मोर।
सबने मुड़कर देखा क्या,
कोई न था, कुछ न था।
वापस मुड़कर देखा चोर,
गप्पू भागा लेकर बोर।
कैसा था गप्पू गपोड,
उसके जैसा कोई न जोड़।



21. मुर्गा बोला

मुर्गा बोला कुक्कड़ू कूं
चल मेरे भैया रुकता क्यूं
कुत्ता भौंके, भों-भों-भों
अटकी गाड़ी पौं-पौं-पौं
बकरी आई, बिल्ली आइ
मैं-मैंआई, म्यांऊं-म्यांऊं आई
धक्की गाड़ी धौं-धौं-धौं
चल दी गाड़ी पौं-पौं-पौं।

22. राम सहाय



क्यों जी बेटा राम सहाय,
इतनी जल्दी कैसे आये?
अभी तो दिन के दो ही बजे हैं,
कहो आजकल बड़े मज़े हैं ।

23. चूहा

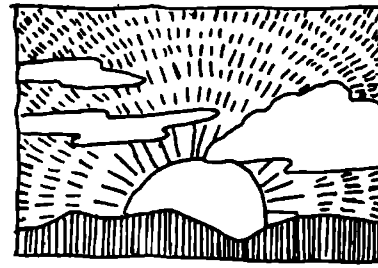
वह देखो वह आता चूहा,
आंखों को चमकाता चूहा।
मूंछों में मुस्काता चूहा,
लम्बी पूंछ हिलाता चूहा ।
मक्खन रोटी खाता चूहा,
बिल्ली से डर जाता चूहा।

- निरंकारदेव सेवक

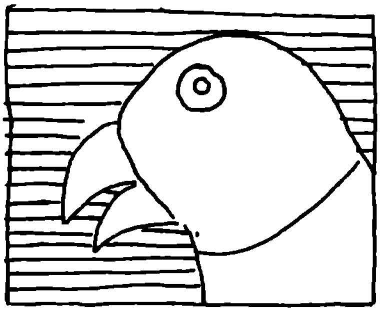
24. बंदर

बंदर नहीं बनाते घर,
घूमा करते इधर-उधर।
आकर कहते खों-खों-खों,
रोटी हमें न देते क्यों ?
छीन - झपट ले जाएंगे,
बैठ पेड़ पर खायेंगे ।

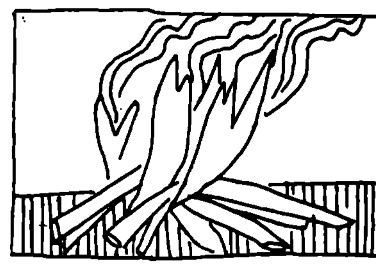
25. लाल–लाल



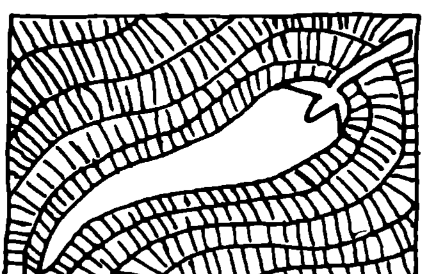
लाल, लाल, लाल, लाल,
क्या सब कुछ होता लाल?
सुबह का सूरज लाल-लाल,
शाम का सूरज लाल-लाल।



लाल, लाल, लाल, लाल,
हमारा खून लाल-लाल ।
तोते की चोंच लाल-लाल,
मसूर की दाल लाल-लाल।



लाल, लाल, लाल, लाल,
जलती आग लाल, लाल,
पकी हुई मिर्च, लाल, लाल,
कटा तरबूज़ लाल, लाल।



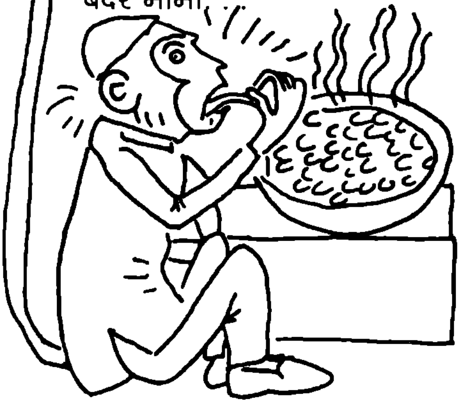
और क्या-क्या होता लाल,
जल्दी ढूंढो लाल-लाल।
लाल, लाल, लाल, लाल,
और क्या-क्या होता लाल?

- प्राशिका समूह

26. बंदर मामा

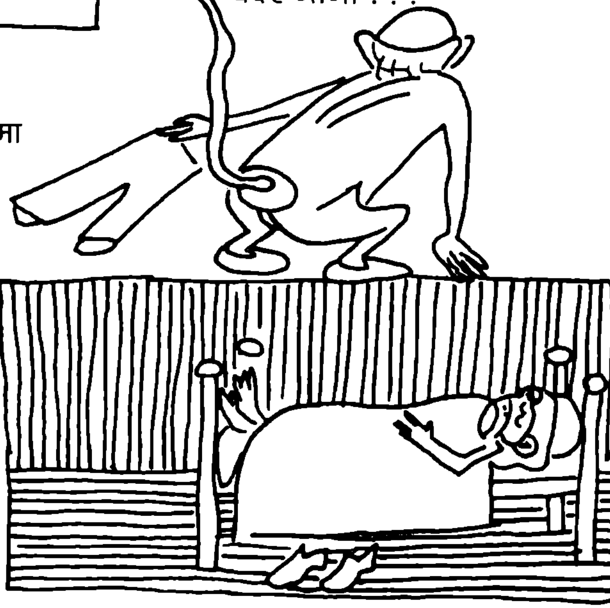


बंदर मामा पहन पायजामा
दावत खाने आए,
पीला कुरता,टोपी जूता
पहन बहुत इतराए।
बंदर मामा. . .



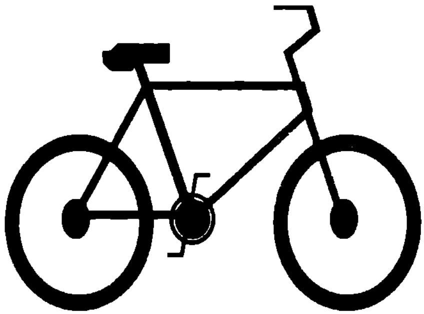
रसगुल्ला लप बोले लूं चख,
डाला मुंह में गप से,
नरम-नरम था, बड़ा गरम था
जीभ जल गई लप से।
बंदर मामा . . .

बंदर मामा फेंक पायजामा
आंसू भर-भर रोए,
घर पर पहुंचे,थे झल्लाए
बिस्तर पर जा सोए।
बंदर मामा. . . ।



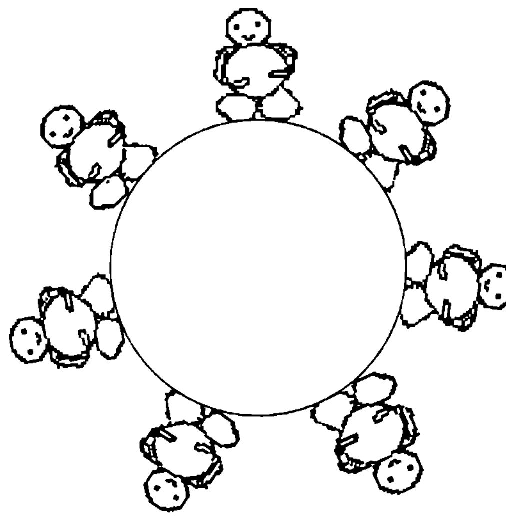


27. क्या–क्या होता गोल



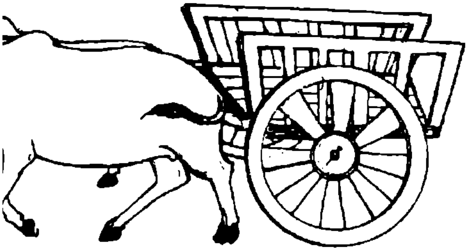
गोल-गोल, गोल-गोल,

सूरज गोल, चन्दा गोल,
सिक्का गोल,चक्का गोल,
और क्या-क्या होता गोल,
नहीं मालूम तो घूमो गोल।

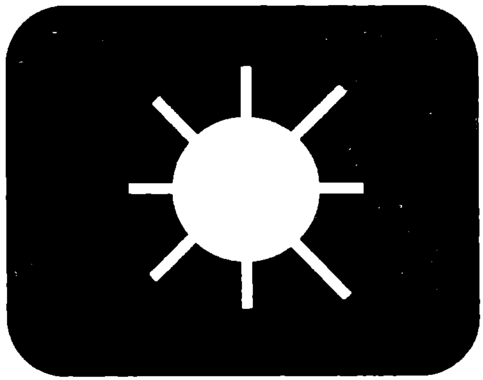


गोल-गोल,
गोल-गोल,
अब रुक आओ,
बैठो गोल।

फिर से बोल, फिर से बोल,
गोल, गोल, गोल, गोल,
गहरा कुआं, गोल-गोल,
रात का चंदा, गोल-गोल,
खिड़की, दरवाज़े. . . . .?
नहीं मालूम तो घूमो गोल।



साइकिल का पहिया. . .,
मोटर का पहिया. . .,
बैलगाड़ी का पहिया. .. .,
रेलगाड़ी का पहिया . . . .,
रात का सूरज.. .. . .,



गोल-गोल,
गोल-गोल,
अब जल्दी से,
बैठो गोल।

रोटी गोल, अंटी गोल,
अंडा गोल, डंडा गोल,
झूठ कहूं तो जल्दी बोल,
नहीं मालूम तो घूमों गोल

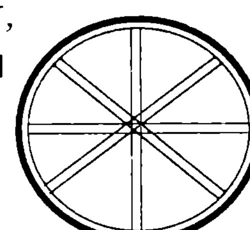
गोल-गोल,
गोल-गोल,
घूमो-गोल,
घूमो-गोल,

अब जल्दी से बैठो गोल,
फिर से बोल, फिर से बोल,

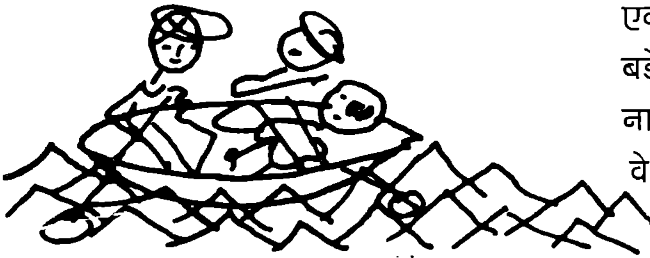
नहीं मालूम तो घूमो गोल,
रात का सूरज नहीं दिखता बोल,
दिखता नहीं है सच्ची बोल,
गोल-गोल-गोल-गोल,

गोल-गोल,गोल-गोल,
घूमो गोलू, घूमो-गोल,
अब जल्दी से बैठो गोल,
गोल-गोल, गोल-गोल।

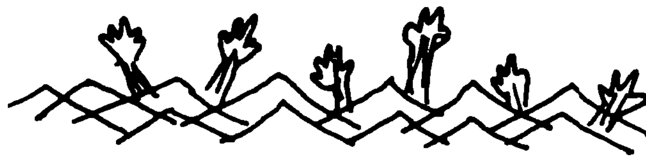
- प्राशिका समूह



28. कुम्हार



एक समय थे तीन कुम्हार,
बड़े चतुर बहुत होशियार ।
नाव बनाकर एक मिट्टी की,
वे चले समुन्दर पार।



पानी में जो नाव न घुलती,
बात हमारी आगे चलती ।

29. एक–अनेक

एक - एक - एक
बनते अनेक

हाथ एक
ऊंगली अनेक



पेड़ एक
डालें अनेक

डाल एक,
पत्ते अनेक।



चिड़िया एक,
पंख अनेक।



पुस्तक एक,
पन्ने अनेक।



शाला एक,
बच्चे अनेक।



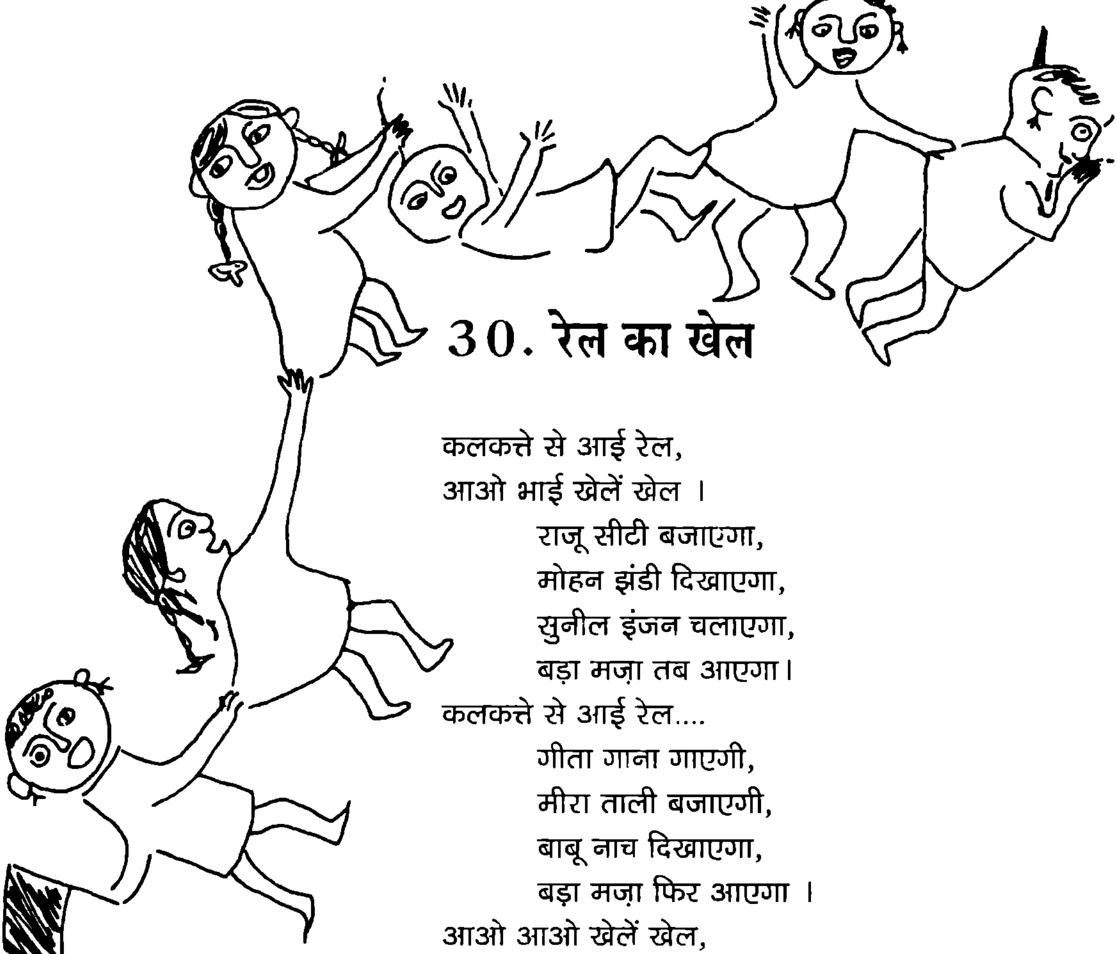
गांव एक,
घर अनेक।

बादल एक,
बूंदें अनेक।



जंगल एक,
पेड़ अनेक,
पेड़ अनेक।





30. रेल का खेल

कलकत्ते से आई रेल,
आओ भाई खेलें खेल ।
राजू सीटी बजाएगा,
मोहन झंडी दिखाएगा,
सुनील इंजन चलाएगा,
बड़ा मज़ा तब आएगा।
कलकत्ते से आई रेल....
गीता गाना गाएगी,
मीरा ताली बजाएगी,
बाबू नाच दिखाएगा,
बड़ा मज़ा फिर आएगा ।
आओ आओ खेलें खेल,
सब मिलकर बनाओ रेल।
दो मिलकर इंजन बन जाओ,
सीटी देकर रेल चलाओ।
झण्डी हरी दिखाऊंगा मैं,
सीटी तुरंत बजाऊंगा मैं।
छुक-छुक, छुक-छुक चलती रेल,
आगे बढ़ती जाती रेल।

31. रेलगाड़ी मेरा नाम

रेलगाड़ी मेरा नाम,
छुक-छुक करना मेरा काम ।
आओ बच्चो जल्दी आओ,
गाड़ी चलने वाली है ।
अगला स्टेशन आयेगा,
इंजन खाना खायेगा ।
हम भी पूरी खाएंगे,
छुक-छुक, छुक-छुक जाएंगे ।
रेलगाड़ी मेरा नाम,
छुक-छुक करना मेरा काम ।
छिक-छिक, छुक-छुक,
छुक-छुक, छुक-छुक,
चलते चलते जाती रूक ।
हम सबकी यह रेल है,
हम सब का यह खेल है,
हम सब का यह मेल है,
चलती फिरती रेल है ।
चलते-चलते जाती रूक,
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक,
नहीं कोयला खाती है,
इसे मिठाई भाती है ।
नहीं छोड़ती यह धुंआ,
मुड़ जाती आये कुआं,
चलते-चलते जाती रूक,
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक,
इसमें नहीं लगा है इंजन,
सीटी देता है जगमोहन ।
ले लो टिकट और चढ़ जाओ,
रेल सफर का मज़ा उड़ाओ ।
चलते-चलते जाती रूक,
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक ।



32. बिल्ली

चूहों की बस्ती में आकर,
बिल्ली ने दुकान जमाई ।
लगी बेचने सस्ते दामों,
मीठे बिस्कुट और मलाई ।
चूहे दौड़ - दौड़कर आते,
लेते और मज़े से खाते ।
पर वे वापस न जा पाते,
बिल्ली का भोजन बन जाते ।

33. एक बुढ़िया

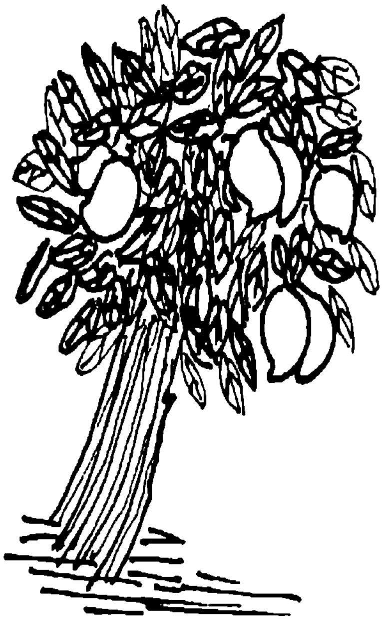
कहीं एक बुढ़िया थी जिसका
नाम नहीं था कुछ भी,
वह दिन भर खाली रहती थी
काम नहीं था कुछ भी।

काम न होने से उसको
आराम नहीं था कुछ भी,
दोपहरी, दिन, रात, सबेरे,
शाम नहीं था कुछ भी।

- निरंकार देव सेवक

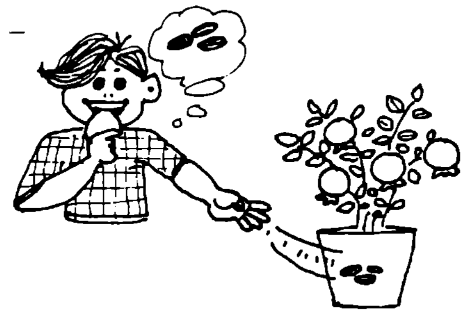


34. जामुन



पौधा तो जामुन का ही था,
लेकिन आए आम,

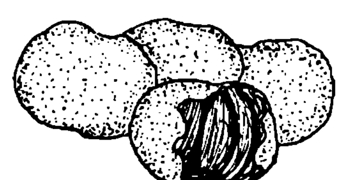
पर जब खाया, तो यह पाया,
ये तो हैं बादाम।



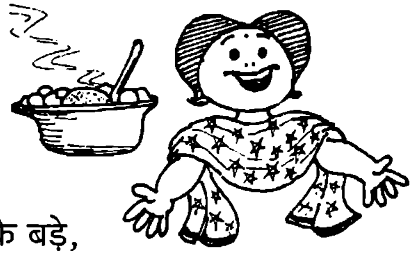
जब उनको बोया ज़मीन में,
पैदा हुए अनार,

पकने पर हो गए संतरे,
मैंने खाए चार।

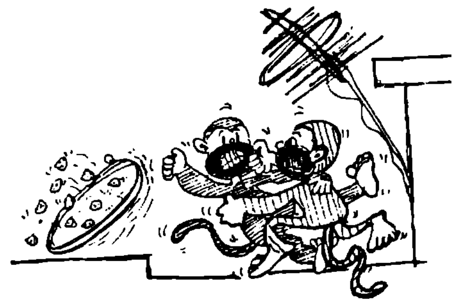
- श्रीप्रसाद



35. पकौड़ी गीत



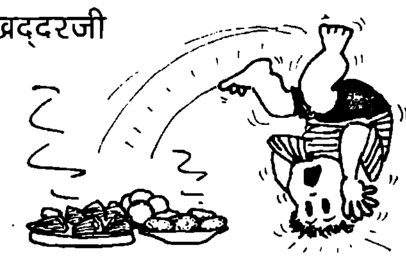
आलू की पकौड़ी, दही के बड़े,
मुन्नी की चुन्नी में तारे जड़े।



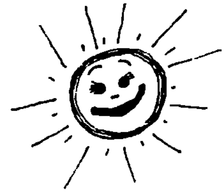
मूंग की मंगौड़ी, कलमी बड़े,
मंगू की छत पर दो बंदर लड़े।

खस्ता कचौड़ी, कांजी के बड़े,
गप्पू जो फिसले तो उल्टे पड़े।

- रामकृष्ण खद्दरजी

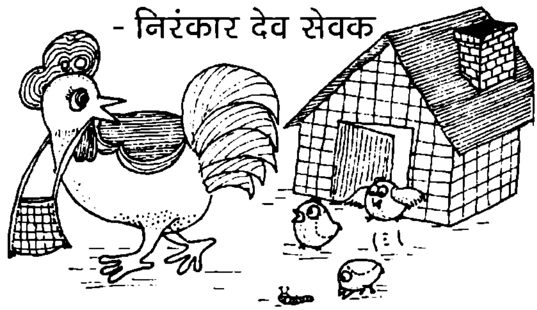


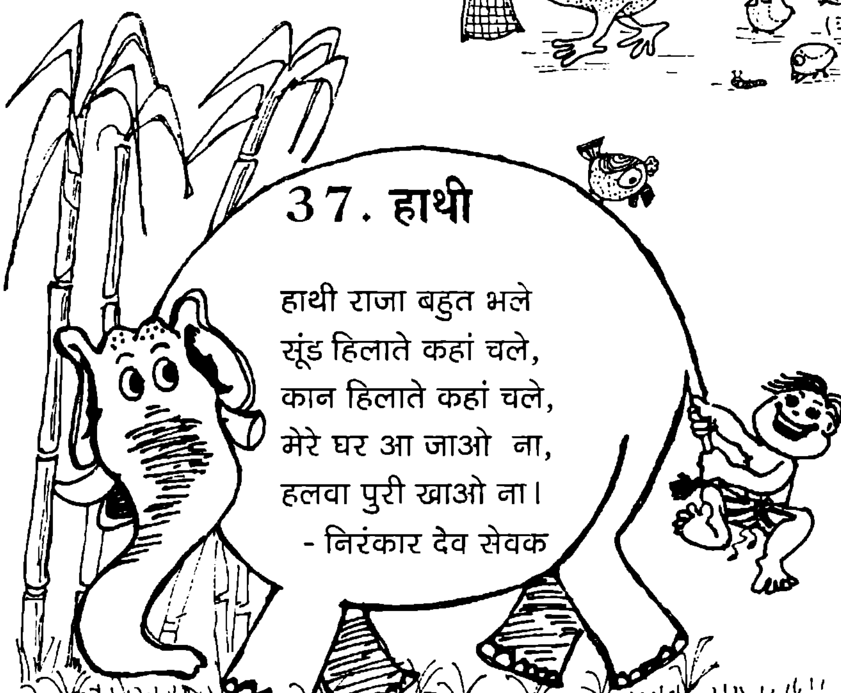
36. मुर्गी मां



मुर्गी मां घर से निकली,
झोला ले बाज़ार चली,
बच्चे बोले चें-चें-चें,
अम्मां हम भी साथ चलें।

- निरंकार देव सेवक





37. हाथी

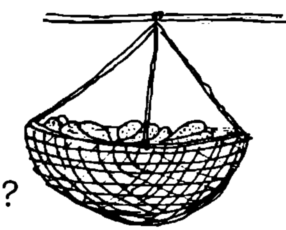
हाथी राजा बहुत भले
सूंड हिलाते कहां चले,
कान हिलाते कहां चले,
मेरे घर आ जाओ ना,
हलवा पुरी खाओ ना।

- निरंकार देव सेवक

38. बकरी



अरे - अरे क्या करती बकरी,
घास पराई चरती बकरी,
बकरी, बकरी उधर न जा,
इधर चली आ, आ - आ - आ,
वहां पकड़ ली जाएगी,
में - में - में चिल्लाएगी।
- निरंकार देव सेवक



39. पान की डलिया



पान की डलिया क्यों लटकी?
लटकी है तो लटकी है
तेरा इसमें जाता क्या?
छाता तेरा उड़ गया,
उड़कर रास्ता मुड़ गया,
उड़ गया तो उड़ गया,
तेरा कौन सा गुड़ गया।
- तेजी ग्रोवर

प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के संदर्भ में संपर्क के लिए पते :

- एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल, म.प्र. 462016
- एकलव्य, कोठी बाजार, होशंगाबाद, म.प्र. 461001
- एकलव्य, पतौआपुरा, शाहपुर, जिला बैतूल, म.प्र. 460440



मुद्रण : राजकमल आफसेट, भोपाल